बहादुर चींटा

तातियाना मकारोवा

चित्र: गेनाडी पावलीशिन

हिंदी: अरविंद गुप्ता

बहादुर चींटा

तातियाना मकारोवा

चित्र: गेनाडी पावलीशिन

हिंदी: अरविंद गुप्ता

एक समय की बात है, एक चींटा था. आप शायद उसका नाम जानना चाहेंगे और यह भी कि उसके दोस्त, उसके चालीस बेटे-बेटियाँ, उसकी प्यारी बूढ़ी माँ और उसकी प्यारी पत्नी, वे सब उसे क्या कहकर बुलाते थे. उसके कई अलग-अलग नाम थे. पर मैं यहाँ उसके सब नाम तो नहीं बता सकती, लेकिन जिस चींटे की मैं बात कर रही हूँ, उसे लोग बस चींटा कहकर ही बुलाते थे.

भोर में सभी चींटियाँ, चींटी के टीले में अभी भी गहरी नींद सो रही थीं. लेकिन चींटा नींद में यह सोच रहा था: "हमारी पहाड़ी पर बीस परिवार रहते हैं. सोमवार को निकोलाई का परिवार चीड़ की सुइयाँ घर लाया. मंगलवार को ऊपर वाला परिवार बुरादा लाया. बुधवार को यरमोलई जंगल गया, और गुरुवार को सेम्योन खिड़कियों के लिए ड्रैगनफ़्लाई का पंख ढूँढ़ने निकल पड़ा. शुक्रवार को, बारिश के बावजूद, येवगेनी को तीन चीड़ की सुइयाँ मिलीं. मेरा अभी उठने का बिल्कुल मन नहीं कर रहा है, लेकिन मुझे अब उठना ही होगा. क्योंकि आज शनिवार है, और आज हमारी बारी है." चींटा उठा और उसने अपने परिवार को पुकारा: "सब उठो! सब बाहर आओ! आज हमें चीड़ की सुइयाँ लाने जंगल जाना है."

चींटा और उसका परिवार पूरे दिन जंगल में कड़ी मेहनत करता रहा. वे सूर्यास्त तक ही वापस लौटे. चींटा छह चीड़ की सुइयों का एक बंडल घसीट रहा था और उसकी पत्नी तीन सुइयों का एक बंडल ढो रही थी. चींटे के बेटे को नाले के पास दो सुइयाँ मिली थीं और उसकी बेटियों के पास कुछ सिंहपर्णी (डैन्डीलायन) के रोएँ थे. सबसे छोटा बेटा एक पत्ते का तना घसीट रहा था और सबसे छोटी बेटी को कुछ परागकण मिले थे. वे जंगल के बीच से गुज़रते लंबे हरे रास्ते पर तेज़ी से आगे बढ़े. लेकिन जब वे आखिरकार घर पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि उनका चींटी का टीला अपनी जगह से गायब था.

"कितना अजीब बात है," चींटा बोला. "यह जंगल का हमारा हिस्सा है. और यह हमारा खुला मैदान है. ये हमारे लाल खसखस के फूल हैं. लेकिन हमारा घर कहाँ है? हमारा विशाल, प्यारा, बीस परिवारों वाला घर?" वह इतना परेशान हुआ कि उसने चीड़ की सुइयों का बंडल नीचे गिरा दिया. उसकी पत्नी ने भी अपना बंडल गिरा दिया. उनके बेटे काँपने लगे और उनके हाथों में जो लकड़ी के चिप्स थे, वे भी गिर गए. उनकी बेटियाँ दुखी होकर सुस्त हो गईं और उन्होंने सिंहपर्णी के रोएँ गिरा दिए. वे वहाँ खड़े-खड़े समझ नहीं पा रहे थे कि वे अब क्या करें? तभी उन्होंने एक मच्छर को ज़ोर से भिनभिनाते सुना:

"अरे चींटे! जब तुम भाग-दौड़ में व्यस्त थे और तुम्हारे बेचारे बच्चे इतनी मेहनत कर रहे थे, खेलने की बजाए उन भयानक कंटीली झाड़ियों को घसीट रहे थे, और जब तुम्हारी बेचारी, थकी हुई पत्नी उन चीड़ की सुइयों को ढो रही थी, तुम्हारा बच्चा एक बड़े तने के नीचे दुबका हुआ था और तुम्हारी सबसे छोटी बेटी पराग के उस भारी बोझ से जूझ रही थी, तब तुम्हारा चींटी का टीला जंगल के दूसरे हिस्से में चला गया. देखो, उन्होंने तुम्हारे लिए एक नोट भी नहीं छोड़ा."

लेकिन मच्छर झूठ बोल रहा था! उसके हाथ में एक पत्ता था, और उस पत्ते पर चींटे के लिए एक नोट था, जिसे उसके दोस्तों ने जाने से पहले उसके लिए छोड़ा था.

उन्हें वह नोट मच्छर को कभी नहीं देना चाहिए था! सब जानते हैं कि मच्छर पर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता. उड़ जाने से पहले मच्छर ने चींटे से उस नोट के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा.

चींटा बहुत अकेला महसूस कर रहा था. अब उसके न तो कोई दोस्त बचे थे और न ही कोई पड़ोसी. उनका कोई नामोनिशान नहीं था. चींटे ने कभी अकेलेपन का मतलब नहीं जाना था. उसे कभी अकेलापन महसूस करने का समय ही नहीं मिला था. चींटियों के टीले की सभी चींटियाँ हमेशा सुबह जल्दी उठ जाती थीं और चींटे को हमेशा जल्दी-जल्दी, ऊपर-नीचे, इधर-उधर, खींचने-धकेलने, और अपने बच्चों को भी अच्छे काम करने की शिक्षा देने की आदत थी. स्वाभाविक रूप से, उसे कभी अकेलापन महसूस करने का समय नहीं मिला था.

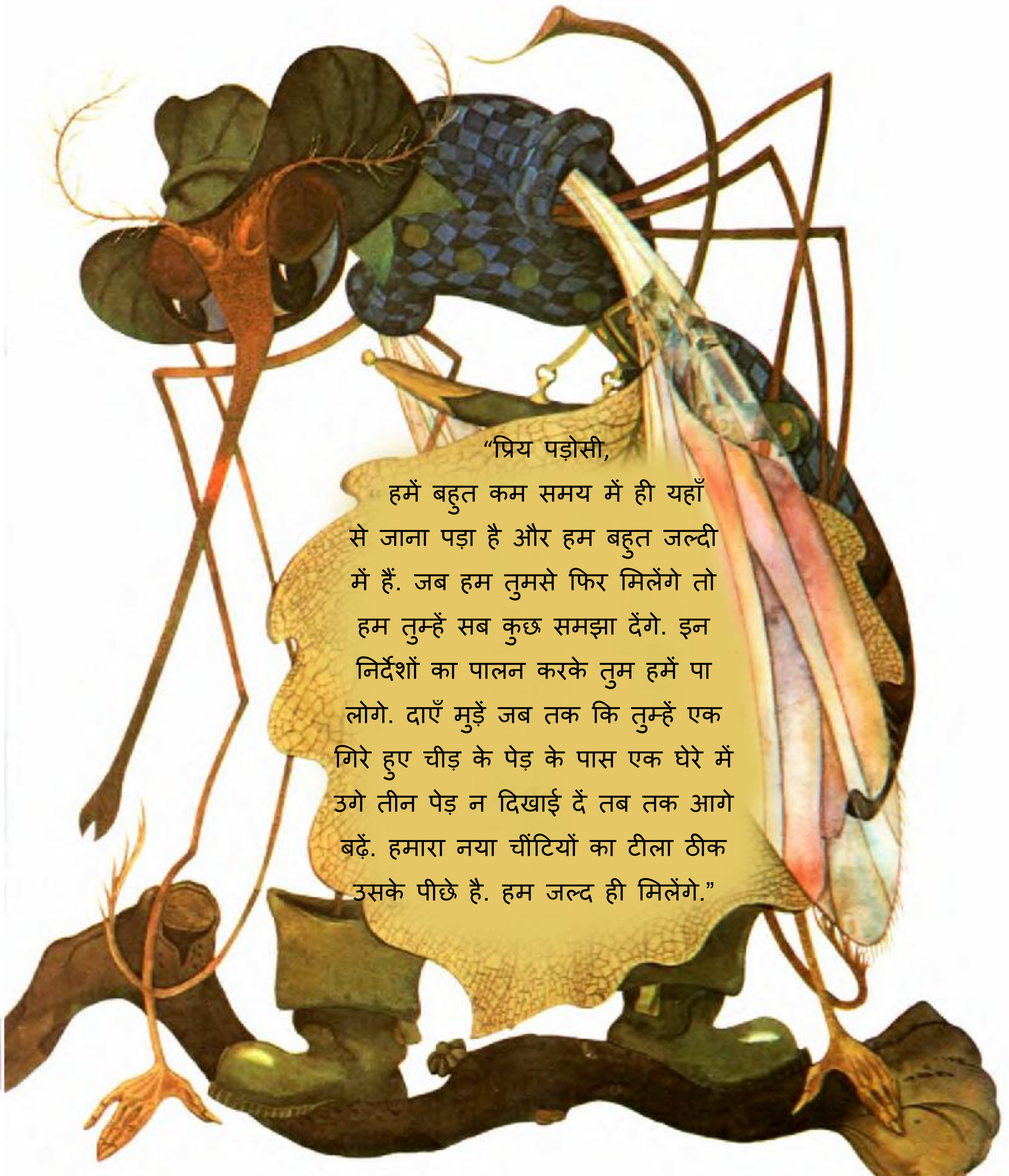

अब उसके पास अकेलेपन के बारे में सोचने का बिल्कुल भी समय नहीं था. क्योंकि वह जानता था कि जल्द ही रात हो जाएगी और उसे अपने परिवार के लिए कुछ आश्रय का प्रबंध करना होगा. उसने अपनी पत्नी का कंधा थपथपाया और खुश दिखने की कोशिश करते हुए कहा, "देखो, तुम बिल्कुल चिंता मत करो. सब ठीक हो जाएगा. एक चींटा अपने परिवार के लिए रात में कोई आश्रय ढूँढ ही लेगा. और चींटियाँ कभी निराश नहीं होतीं, वे कभी हार नहीं मानतीं, यहाँ तक कि चींटियों के बच्चों की परी-कथाओं में भी नहीं."

और फिर चींटा रात के लिए कोई घर ढूँढ़ने निकल पड़ा. वह हर पेड़ के तने और घास के हर तिनके के पास रुका, लेकिन वे सब या तो बहुत नम थे या बहुत सख्त और ठंडे. अचानक उसकी नज़र एक खाली टिन के डिब्बे पर पड़ी जिस पर एक चमकदार लेबल चिपका हुआ था. "आहा!" उसने कहा. "इसकी अच्छी टिन की छत है और एक बढ़िया दरवाज़ा है. मैं अपने बच्चों के लिए इससे बेहतर घर की कामना नहीं कर सकता था." कुछ ही समय में उसका परिवार वहाँ आ गया. अगली सुबह जब सूरज निकला तो उसकी किरणें चमकदार टिन से टकराईं, जिससे डिब्बा चमक उठा.

चींटे ने मन ही मन कहा: "अरे, सूरज की किरणें भी हमारे नए घर पर चमकने में खुश हैं. इसका मतलब है कि दुनिया में इससे बेहतर कोई जगह नहीं है. अब हम हमेशा के लिए यहीं बस जाएँगे."

चींटे को यह बताने वाला कोई नहीं था कि अगर उसे अपने परिवार को बचाना है तो उसे जल्दी करनी होगी, क्योंकि ऊदबिलावों ने एक नया बाँध बनाया था, जिससे अब नदी पहाड़ी के चारों ओर घूम जाएगी और पानी जल्द ही उस घास के मैदान में आकर भर जायेगा जहाँ वे अभी-अभी आए थे. इसीलिए उसके दोस्त इतनी जल्दी में एक नए चींटियों के टीले पर चले गए थे और उन्होंने पिछले दिन उसके और उसके परिवार के लौटने का इंतज़ार तक नहीं किया था. लेकिन चींटे को इस बारे में कुछ भी पता नहीं था. वह बहुत खुश था और अपने नए घर में इधर-उधर भाग रहा था. उसने दरवाज़े पर मकड़ी के जाले का एक पर्दा लटकाया. ओस की बूँदें उस पर हीरे की तरह चमक रही थीं. उसने सबके लिए मुलायम काई के बिस्तर बनाए. अब सर्दियों में भी वो गर्म रहेंगे. फिर उसने चारों ओर देखा और पाया कि सब कुछ ठीक था. इसलिए उसने एक गृह प्रवेश पार्टी करने का फैसला किया. उसने एक नोटिस लगाया:

पाँच बजे, ड्रैगनफ़्लाई और पतंगों का एक झुंड उसके नए घर में उड़ता हुआ आया. चींटा उन्हें जानता तो नहीं था, लेकिन शुरू से ही वे उसे पसंद आए.

जब जंगल के जानवर सोच रहे थे कि ये ड्रैगनफ़्लाई और पतंगे कहाँ हैं, तो मैगपाई ने कहा: "अरे, वे सब एक गोल टिन के घर में गृह प्रवेश की पार्टी कर रहे हैं. अगर तुम ध्यान से सुनो, तो तुम उन्हें गाते हुए भी सुन सकते हो."

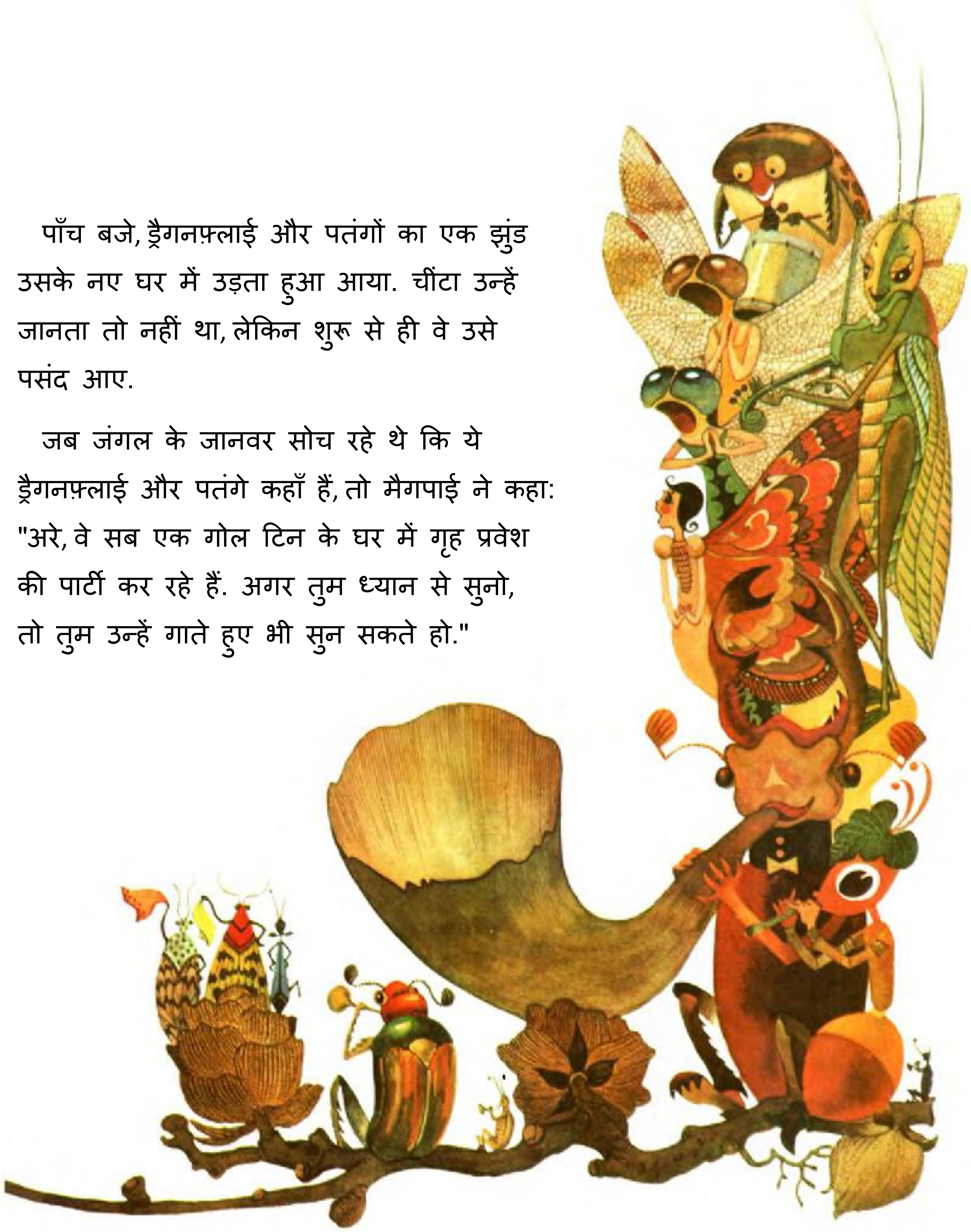

वहां सभी के लिए जगह थी
और खाने-पीने की चीजें भी
पर्याप्त मात्रा में थीं.

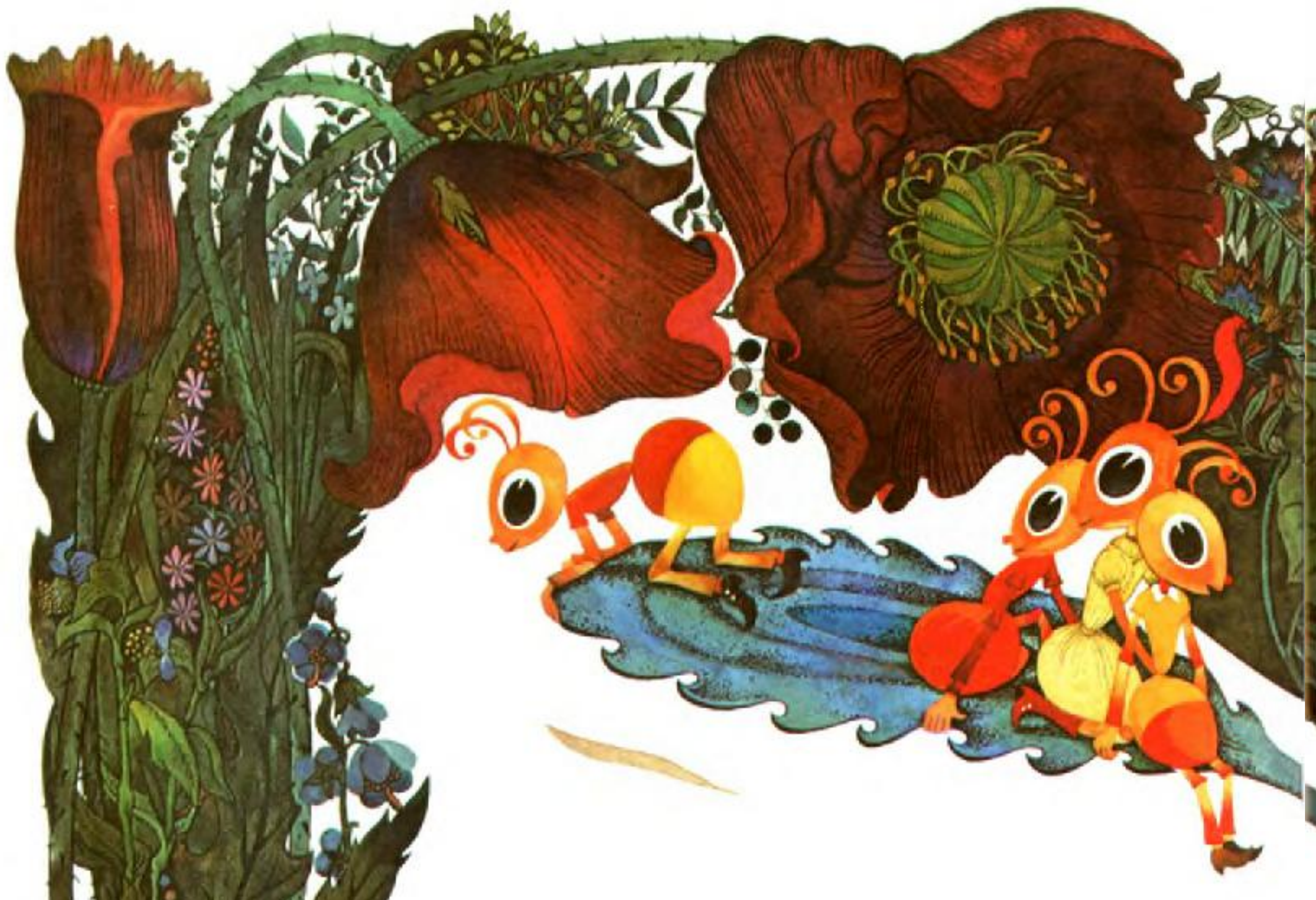

थोड़ी देर बाद, चींटे का सबसे बड़ा बेटा, जो लाल रंग का था, ने टहलने जाने का अपना मन बनाया. लेकिन बाहर निकलने से पहले ही वह दरवाज़े पर जाकर रुका और चिल्लाया: "बचाओ! हम पानी से घिरे हुए हैं! बाढ़ आ गई है! बचाओ!"

"बचाओ! बचाओ! बाढ़ आ गई है!" पतंगे और ड्रैगनफ़्लाई चिल्लाए और वे दरवाज़े से बाहर उड़ गए. वे अपनी प्लेटों में ढेर सारी स्वादिष्ट चीज़ें छोड़ गए.

हमेशा की तरह, बहादुर चींटे ने खतरे का डटकर सामना किया. वह घबराने वालों में से नहीं था. चिंता करने की कोई बात नहीं थी, क्योंकि वह और उसका परिवार अब अपने नए घर में नदी के किनारे नौकायन कर रहे थे. ज़िंदगी अब भी पहले जैसी ही चिंताओं और मेहनत से भरी थी. चींटे को हमेशा की तरह हर सुबह जल्दी उठना पड़ता था, जल्दी-जल्दी रस्सियाँ लगानी पड़ती थीं, पाल को बाँधना पड़ता था, डेक पर सबको पाइप से संदेश भेजना पड़ता था, लैंडिंग पर सामान बाँधना पड़ता था, सामान लाना पड़ता था, किनारे की खोज करनी पड़ती थी, वहाँ मिलने वाली अजीब चींटियों से बातचीत करनी पड़ती थी और उन्हें बताना पड़ता था कि हाउसबोट में रहना उसे कितना अच्छा लगता था.

क्या आपने कभी नदी किनारे खड़े होकर दूर से कोई चमकती हुई चीज़ देखी है? क्या आपको कभी लगा कि आपने दूर से कोई मधुर गीत सुना है:

"मैं आपको अपने परिवार के बारे में बताता हूँ:

जैसा कि आप देख रहे हैं, हमारी संख्या बहुत है.

हम नाव में सवारी करके खुश हैं

हम समुद्र में जा रहे हैं! हम तैर रहे हैं!

अब हालाँकि हममें से किसी के मीनपंख नहीं है,

फिर मैं अपने बच्चों को तैरना सिखा रहा हूँ,

क्योंकि मैं वही हूँ जो मैं हूँ,

मैं एक समुद्री चींटी हूँ, बस!"

समाप्त